All PDF Collection
PDF Seva

श्री पार्श्वनाथ-स्तोत्र

कविश्री द्यानतराय- रचित

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजें भजें नाय-शीशं |
मुनीन्द्रं गणीन्द्रं नमें जोड़ि हाथं, नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथं ||१||

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावे, महा-आग तें, नाग तें तू बचावे |
महावीर तें युद्ध में तू जितावे, महा-रोग तें, बंध तें तू छुड़ावे ||२||

दुःखी-दुःख-हर्ता, सुखी-सुक्ख-कर्ता, सदा सेवकों को महानंद-भर्ता|
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषम डाकिनी विघ्न के भय अवाचं||३||

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने|
महासंकटों से निकारे विधाता, सबे संपदा सर्व को देहि दाता||४||

महाचोर को, वज्र को भय निवारे, महापौन के पुंज तें तू उबारे|
महाक्रोध की अग्नि को मेघधारा, महालोभ-शैलेश को वज्र मारा||५||

महामोह-अंधेर को ज्ञान-भानं, महा-कर्म-कांतार को द्यौ प्रधानं|
किये नाग-नागिन अधोलोक-स्वामी, हर्यो मान तू दैत्य को हो अकामी||६||

तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनं, तुही दिव्य-चिंतामणी नाम-एनं|
पशू-नर्क के दुःख तें तू छुड़ावे, महास्वर्ग में, मुक्ति में तू बसावे ||७||

करे लोह को हेम-पाषाण नामी, रटे नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी|
करे सेव ताकी करें देव सेवा, सुने बैन सो ही लहे ज्ञान मेवा||८||

जपे जाप ताको नहीं पाप लागे, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागे|
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा तें सरें काज मेरे||९||

(दोहा)

गणधर इन्द्र न कर सकें, तुम विनती भगवान् |
'द्यानत' प्रीति निहार के, कीजे आप समान ||१०||

By : www.PDFSeva.com